स्वच्छ विकास एवं जलवायु पर एशिया-प्रशांत साझीदारी

स्वच्छ विकास एवं जलवायु पर एशिया-प्रशांत साझीदारी
मंत्रिस्तरीय उद्घाटन बैठक
सिडनी, 11-12 जनवरी 2006
विज्ञप्ति

11-12 जनवरी, 2006 को स्वच्छ विकास एवं जलवायु पर एशिया-प्रशांत साझीदारी की अपनी पहली मंत्रिस्तरीय बैठक के लिए हम सिडनी में मिले।

इस बैठक में हमने 28 जुलाई, 2005 को विएंटियाने में घोषित विजन स्टेटमेंट को कार्यान्वित करने के लिए ढांचा बनाने हेतु एक चार्टर को अपनाया। इस विजन के केंद्र में है हमारा यह दृढ विशवास कि विकास को आगे बढ़ाने एवं गरीबी उन्मूलन को प्राप्त करने की तत्काल आवश्यकता है। साथ-साथ काम करने से हम अपनी बढ़ी हुई ऊर्जा जरूरतों और उससे जुड़ी हुई चुनौतियों से निपटने में बेहतर कामयाब होंगे। वायु प्रदूषण, ऊर्जा सुरक्षा, और ग्रीन हाउस गैस की सघनता कम करने में भी कामयाब होंगे।

हमारी ऊर्जा जरूरतें बड़ी तेजी से बढ़ रही हैं। हमें इस क्षेत्र में आने वाले दशकों में बड़े स्तर पर निवेश करना होगा। हमने यह पहचान की कि आने वाले वर्षों में भूमंडलीय ऊर्जा आपूर्ति का ज्यादातर हिस्सा नवीकरणीय ऊर्जा और परमाणु ऊर्जा से ही पूरा होगा। हम यह भी जानते हैं कि हमारी अर्थव्यवस्थाएं अभी जीवाश्म ईंधन के सहारे टिकी हुई हैं और हमारे जीवन में ही नहीं आने वाली पीढ़ियों तक भी ये एक अनिवार्य सचाई रहेंगी। इसलिए यह हमारी जरूरत है कि हम स्वच्छतर एवं कम उत्सर्जन प्रौद्योगिकियों के विकास, प्रदर्शन एवं कार्यान्वयन के लिए मिल कर काम करें ताकि हम जीवाश्म ईंधनों के किफायती इस्तेमाल को जारी रख सकें और वायु प्रदूषण व ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन पर भी नकेल रख सकें। इस सहयोग के जरिये हम मिलजुल कर ऐसी संभावनाशील प्रौद्योगिकियों के कार्यान्वयन को बढ़ावा दें, जिससे ऊर्जा की बेहतर क्षमता प्राप्त हो और वायु प्रदूषण और ग्रीन हाउस गैसों की सघनता को कम किया जा सके।

एक और बड़ी समस्या है ऊर्जा सुरक्षा। आर्थिक विकास और बेहतर जीवन स्तर इस बात पर निर्भर करेगा कि हमारे पास भरोसेमंद एवं पहुंच के भीतर विविध किस्म के ऊर्जा संसाधन हों। इस प्रकार विभिन्न जीवाश्म ईंधनों की ग्रीन हाउस गैस सघनता घटाने की दिशा में हमारे प्रयास महत्वपूर्ण ऊर्जा सुरक्षा प्रदान करेंगे।

हमारे विचार में खास तौर पर जलवायु परिवर्तन एक गंभीर खतरा है, जिसे एक दीर्घावधि प्रतिबद्धता मानकर ठोस काम करने की जरूरत है। हमारा सहयोग जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेंशन के तहत सतत बना रहेगा और क्योटो प्रोटोकॉल को मदद ही पहुंचाएगा, लेकिन उसका स्थान नहीं लेगा।

स्वच्छ विकास एवं जलवायु के बारे में हमारी सरकारों के द्वारा व्यापक स्तर पर किए जा रहे राष्ट्रीय कार्यक्रमों और परियोजनाओं की हमने समीक्षा की। इस सहयोग के लिए प्रत्येक साझीदार का योगदान मूल्यवान होगा। हमारी सरकारों ने साझीदारी परियोजनाओं और गतिविधियों के प्रति गंभीर प्रतिबद्धता जताई है। हमारा विचार है कि इस प्रयास में निजी क्षेत्र की भूमिका महत्वपूर्ण है। इसलिए हमें इसके लिए निजी एवं सार्वजनिक क्षेत्र से अच्छी-खासी मात्रा में वित्तीय, मानव, और अन्य संसाधन जुटाने होंगे। साझीदारी का मकसद बेहतरीन वातावरण निर्मित कर   के स्वच्छ एवं कम उत्सर्जन वाली प्रौद्योगिकियों में घरेलू और विदेशी निवेश जुटाना है।

हमने साझीदारी की कार्य योजना तैयार की, जो टिकाऊ विकास को गति देने में हमारे निजी क्षेत्रों, हमारे अनुसंधान से जुड़े लोगों और हमारे सरकारी क्षेत्रों की क्षमता और योगदान पर नई रोशनी डालती है। इन मामलों से निपटने के लिए हम अपनी अर्थव्यवस्थाओं के सार्वजनिक, निजी और अनुसंधान क्षेत्रों के कुछ खास विशेषज्ञों को एक साथ लाएंगे। हम इससे संबंधित मामलों जैसे कार्यस्थल पर सुरक्षा और अपनी जनता की भलाई और सुरक्षा से जुड़े मुद्दों पर अपने-अपने अनुभवों को भी बांटेंगे।

हमारी कार्ययोजना बिजली उत्पादन और हमारी अर्थव्यवस्थाओं के प्रमुख औद्योगिक क्षेत्रों पर केंद्रित है। हमने निम्नलिखित आठ सार्वजनिक-निजी क्षेत्र के कार्य दलों का गठन किया: 1- स्वच्छतर जीवाश्म ऊर्जा; 2- नवीकरणीय ऊर्जा एवं वितरित उत्पादन; 3- बिजली उत्पादन एवं प्रेषण; 4- इस्पात; 5- एलुमिनियम; 6- सीमेंट; 7-कोयला खनन; और 8- भवन निर्माण एवं संबंधित उपकरण।

हमने विभिन्न कार्य दलों को निर्देश दिया है कि बेहतरीन कार्य पद्धतियों को जहां तक संभव हो उन्नत बनाएं और अलग-अलग स्तर की प्रौद्योगिकियां विकसित करें ताकि उत्पादन का स्तर सुधरे और लागत भी कम आए।

इस संबंध में हमने हरेक कार्य दल को निम्न निर्देश दिए हैं:

- अपने से जुड़े विषय के क्षेत्र में स्वच्छ विकास एवं जलवायु की मौजूदा स्थिति का आकलन करें,
- कार्यकुशलता कैसे बढ़ाई जाये इस   बारे में ज्ञान, अनुभव और अचछी कार्य पद्धतियों को आपस में बांटें,
- अनुकूलता के आधार पर जहां जरूरी हो, मौजूदा एवं उभरती प्रौद्योगिकियों का व्यवसिथत तरीके से रोडमैप तैयार करें। और
- आपसी सहयोग और जहां संभव हो, महत्वाकांक्षी एवं यथार्थ आधारित लक्ष्य तय करें और विशेष

अवसरों की पहचान करके कार्य योजना विकसित करें।

जैसे-जैसे कार्य दल अपने काम को आगे बढ़ाते हैं, साझीदारी की कार्य योजना भी गति पकड़ेगी।

शुरुआत में साझीदारी ने कुछ खास क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया। विजन स्टेटमेंट ने परिवहन जैसे अन्य क्षेत्रों पर भी विस्तार से प्रकाश डाला। जैसे-जैसे सहयोग आगे बढ़ता है, इन क्षेत्रों में साझीदारी भी विकसित होगी। वर्तमान कार्य दलों के अलावा भी कौशल के आदान-प्रदान जैसे कई आसान अवसर निकल आएंगे, जो स्वचछ विकास और जलवायु के लक्ष्य को प्राप्त करने में सहायक होंगे। इस संबंध में हम एशिया-प्रशांत ऊर्जा प्रौद्योगिकी साझीदारी केंद्र की स्थापना के प्रस्ताव पर विचार करना चाहेंगे ताकि ऊर्जा लेखा-परीक्षा के कार्यान्वयन और विकास पर ध्यान केंद्रित किया जा सके और आने वाली परियोजनाओं पर ध्यान दिया जा सके। हम भावी बैठकों में दिलचस्पी के अन्य क्षेत्रों पर विचार करने और विभिन्न मामलों को आसान बनाने की कोशिश करेंगे, साथ ही टिकाऊ विकास एवं ऊर्जा रणनीतियों के विकास और कार्यान्वयन में अपने-अपने अनुभवों को बांटने हेतु उचिम मंच भी प्रदान करेंगे।

यह साझेदारी टिकाऊ आर्थिक विकास की राह में आने वाली जलवायु परिवर्तन, ऊर्जा सुरक्षा और वायु प्रदूषण से संबंधित गंभीर और दीर्घकालिक चुनौतियों पर विचार-विमर्श करने के लिए प्रमुख राष्ट्रों को एक मंच पर लाती है। मिलकर काम करके हम भूमंडलीय स्वच्छ विकास और जलवायु की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान कर सकते हैं।